सत्यकाम जाबाल

कांतिलाल जोशी

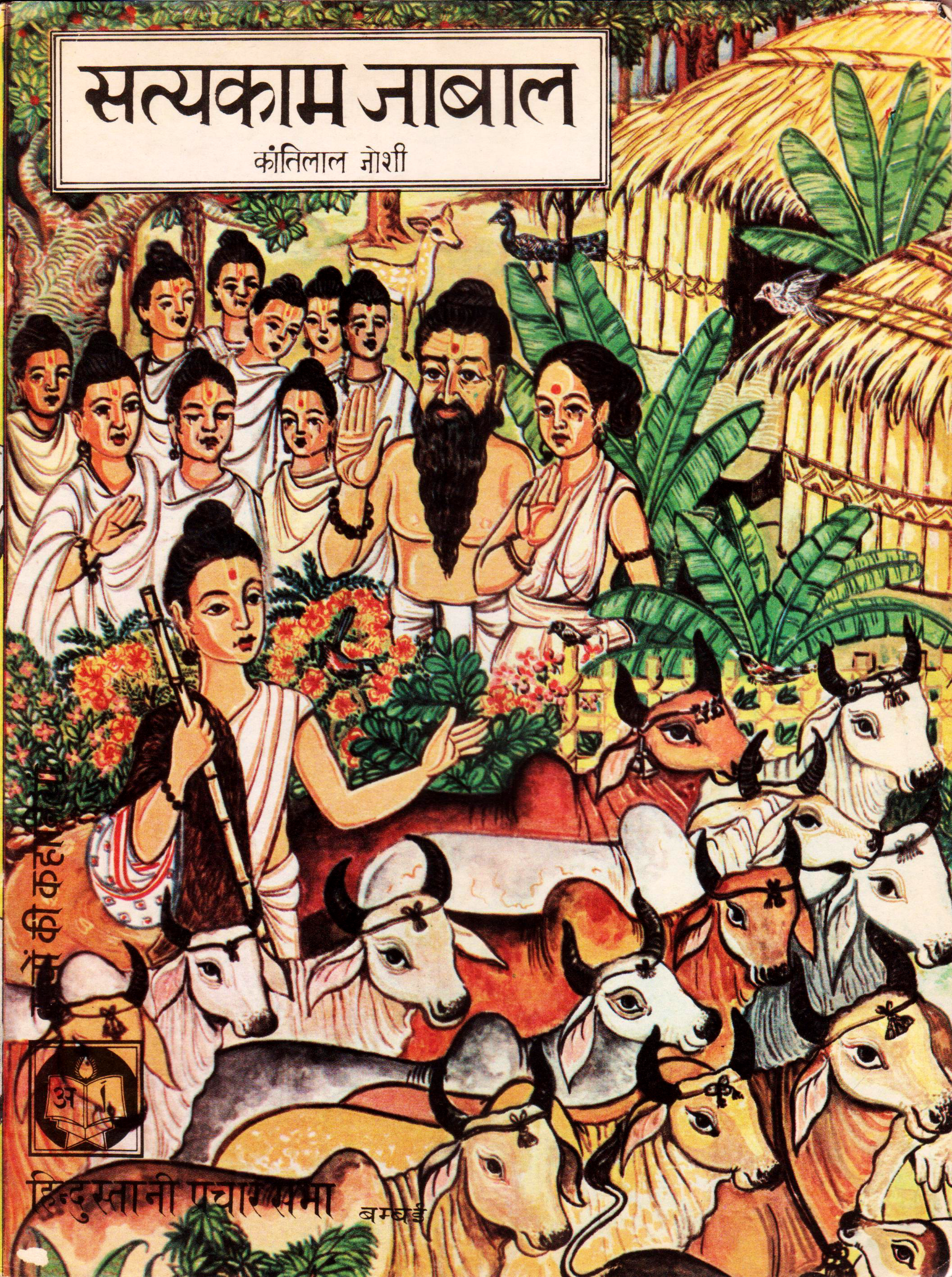

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बच्चों की कहानियां—४५

सत्यकाम जाबाल

कांतिलाल जोशी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८२

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

जे. जे. पांचाल

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
७, नेताजी सुभाष रोड
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :

अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डाक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :

दो रुपये

सत्यकाम जाबाल

बहुत पुराने जमाने की बात है। आजकल की तरह उस जमाने में पढ़ना-लिखना इतना आसान नहीं था। पढ़ाई के लिए अपना घर छोड़कर गुरूकुलों में जाना पड़ता था, और वहीं रहकर विद्यार्थी पढ़ाई पूरी करते थे।

विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था, और गुरूकुल के नियमों के अनुसार जीवन जीना पड़ता था। इन गुरूकुलों में बड़े-बड़े राजाओं-महाराजाओं के बच्चे भी, दूसरे साधारण विद्यार्थियों की तरह जीवन बिताते थे और पढ़ाई करते थे। अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं था।

गुरूकुल नगर से दूर, किसी जंगल में आश्रम की तरह बने होते थे। सैकड़ों विद्यार्थी गुरू के पास रहकर पढ़ाई करते थे। वहां नौकर-चाकर नहीं होते थे। सारा काम विद्यार्थियों को खुद करना पड़ता था। हर गुरूकुल श्रम, सेवा तथा तप का केंद्र हुआ करता था, और पढ़ाई भी ऐसे कामों के जरिए ही हुआ करती थी।

ऐसा ही एक गुरूकुल था महर्षि हरिद्रुम गौतम का। वह उस समय का एक आदर्श, मशहूर गुरूकुल था। उस समय के आचार्यों में गुरू गौतम की बड़ी

ऊंची जगह थी। दूर-दूर से विद्यार्थी उनके पास आकर पढ़ाई करते थे। उनके गुरूकुल का छात्र बनना तब बड़े गौरव की बात समझी जाती थी।

एक दिन सबेरे आचार्य हरिद्रुम गौतम अपने विद्यार्थियों को पेड़ की छाया में बिठाकर वेद-मंत्र पढ़ा रहे थे। सभी विद्यार्थी पढ़ाई में डूबे थे कि तभी एक दस-बारह साल का बालक गुरू गौतम के पास आया। उन्हें प्रणाम कर बड़ी नम्रता के साथ बोला, "गुरूदेव, मैं आपकी शरण में आया हूं। मैं गुरूकुल के सभी नियमों का पालन करूंगा। मुझे आपके पास पढ़ाई के लिए मेरी मां ने भेजा है। मेरी प्रार्थना कबूल कीजिए और अपने गुरूकुल में मुझे भी जगह दीजिए।"

बालक के मुंह पर अनोखा तेज था। उसके बोलने में दृढ़ता और निर्भीकता थी।

गुरू ने उसे अपने पास बिठाया और बड़े प्यार से पूछा, "बेटे, तुम कौन हो? तुम्हारे पिता का नाम क्या है और तुम्हारी जाति क्या है?"

बालक ने जवाब दिया, "मैंने अपने पिता को नहीं देखा है और न उनका नाम ही जानता हूं। मैं अपनी मां से पूछकर आपको बता सकूंगा। लेकिन गुरूदेव, मैं आपकी सेवा में दिन-रात रहूंगा और गुरूकुल के हर नियम का पालन करूंगा। आप मुझे शिष्य के रूप में स्वीकार करें।"

गुरू ने बड़े प्रेम से उस बालक से कहा कि कल तुम अपनी मां से अपने पिता का नाम तथा अपनी जाति पूछकर आना।

आश्रम के दूसरे लड़कों में बड़ी खलबली मची। हंसी-मजाक भी होने लगा। यह कैसा लड़का है जिसे अपने पिता का नाम भी नहीं मालूम और न अपनी जाति ही जानता है!

एक ने कहा, "मालूम होता है, यह ब्राह्मण नहीं है।"

दूसरे ने कहा, "मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

एक ने तो गुरू से पूछ ही लिया, "गुरूदेव, जिस बालक का यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो, उसे भी आप अपना छात्र बनायेंगे?"

दूसरे ने पूछा, "गुरूदेव, जिस बालक को अपने पिता का नाम नहीं मालूम और जो अपनी जाति भी नहीं

" गुरुदेव, मैं आपकी शरण में आया हूं ।"

जानता, क्या वह भी यहां रहकर पढ़ाई कर सकता है ?"

वह लड़का थोड़ी देरतक इन बातों को सुनता रहा। वह इनका अर्थ भी समझ रहा था। जाते समय उसने गुरू के चरणों में सर टेका, शिष्य-मंडली को प्रणाम किया और वहां से चल पड़ा।

बालक के तेजस्वी रूप और नम्रता से सभी प्रभावित थे। गुरू गौतम ने अपने शिष्यों से गम्भीर आवाज में कहा, "तुम सबका आज का बर्ताव बड़ा ही गंदा था। किसी नये लड़के के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह भी तुम्हें मालूम नहीं। तुमने देखा न, वह कितना सरल, तेजस्वी और होनहार था। उनका व्यवहार कितना विनयशील था।"

गुरू की झिड़की से सारी शिष्य-मंडली खामोश हो गयी।

गुरू गौतम के मन पर उस भोले, सरल और तेजस्वी बच्चे की गहरी छाप पड़ी। वे बराबर याद करते कि कितना प्यारा और निर्भीक था वह! क्या अद्भुत तेज उसके मुंह पर झलकता था। पता नहीं, किस तेजस्वी मां-बाप की वह संतान है। ऐसे तेज बच्चे को पढ़ाई से वंचित रखना तो बहुत बड़ा अन्याय होगा। मैं उसे अपना शिष्य जरूर बनाऊंगा।

दूसरे दिन सुबह, ठीक उसी समय, जब गुरू गौतम अपने शिष्यों को वेद-मंत्रों का पाठ सिखा रहे थे, वह तेजस्वी बालक उसी वेशभूषा में वहां आया। उसने गुरूसमेत सबको प्रणाम किया।

गुरू ने उसे अपने पास बिठाया और बड़े स्नेह से पूछा, "कहो बेटे, तुम्हारी मां ने तुम्हें क्या बताया ?"

बालक ने बड़ी विनम्रता से, साफ शब्दों में कहा, "गुरूदेव, मैंने अपनी मां से आपका प्रश्न पूछा तो उसने बताया कि वह भी मेरे पिता का नाम नहीं जानती है और न उसे जाति का पता है।

"जिस जगह पर वह रहती थी, वहां कई साधु-संत आते-जाते थे। वह उनकी सेवा में ही लगी रहती थी। उस समय वह युवती थी। उन्हीं दिनों मैं उसके गर्भ में आया था। मेरे उस पिता का नाम और जाति मेरी मां को भी मालूम नहीं है। उसने यह कहा है कि गुरूदेव से जाकर सब सच-सच कह देना। यदि पढ़ाई का संस्कार मां के नाम से हो

सकता हो तो बताना कि मां का नाम जाबाला है।"

उसकी बात खत्म होते ही दूसरे लड़कों में खलबली मच गयी। सब एक-दूसरे से कुछ-कुछ कहने लगे।

गुरू गौतम भी गहरे सोच में पड़ गये। बच्चे की तेजस्विता उन्हें अपनी तरफ खींच रही थी।

उन्होंने काफी सोचकर कहा, "बेटा, तुम्हारी बातें सुनकर मुझे पक्का भरोसा हो गया कि तुम एक सच्चे ब्राह्मण कुमार हो। तुम्हारा व्यवहार ही इसका प्रमाण है। मैं तुम्हारा नाम 'सत्यकाम' रखता हूं और तुम्हें शिष्य के रूप में स्वीकार करता हूं। मैं तुम्हें सारी चीजें सिखाऊंगा। मैं तुम्हें आज इसी समय उपवीत संस्कार देता हूं।"

गुरू गौतम का यह फैसला सुनकर सारे लड़के चकित रह गये। गुरू तथा गुरुपत्नी ने उसका उपनयन संस्कार किया।

गुरू ने शिष्यों से कहा, "सुनो, ज्ञान का सच्चा अधिकारी वही है जो उसकी खोज में है। सत्यकाम सच्चा लड़का है। वह निष्कलंक है। ऐसे बालक को ज्ञान देना मैं अपना धर्म समझता हूं। मेरा तुम सबसे कहना है कि तुम्हारा बर्ताव सत्यकाम के साथ प्यार का होना चाहिए। तुम उसे अपने छोटे भाई के रूप में अपनाओ।"

सत्यकाम जाबाल ने न केवल सब लड़कों का दिल जीत लिया बल्कि पढ़ाई में भी सबसे आगे निकल गया। गुरू गौतम उसे बेहद चाहने लगे।

कुछ समय बीतने पर गुरू गौतम ने अपने प्रिय शिष्य सत्यकाम को अपने पास बुलाया और दूसरे लड़कों को सुनाते हुए कहा, "बेटा सत्यकाम, अब मैं तुम्हें सेवा का एक काम सौंपता हूं। आश्रम की गौशाला में चार सौ ऐसी गायें हैं, जो बहुत कमजोर हो गयी हैं। उन्हें यहां से दूर एक ऐसी जगह पर रखना है, जहां हरी घास हो और हवा-पानी भी ठीक हो। तुम इन गायों के साथ वहां रहो और इनकी सेवा करो। जब इनकी गिनती चार सौ से एक हजार हो जाये, तब इन्हें लेकर वापस आओ। मेरा आशीर्वाद है कि तुम्हारी यह सेवा

" बेटा, तू गाय की सेवा के काम में सफल होगा।"

तुम्हारी सभी इच्छाओं को पूरा करेगी और तुम पुण्य के अधिकारी बनोगे।"

सत्यकाम बड़े विनीत भाव से बोला, "गुरूदेव, आपकी आज्ञा ही मेरे लिए सबकुछ है। मैं अपने को भाग्यवान समझता हूं कि आपने मुझे सेवा का यह काम दिया। आप अब मुझे जाने की आज्ञा दें। मैं पूरी तरह तैयार हूं।"

दूसरे लड़कों को तरह-तरह की आशंकाएं हुईं। सत्यकाम बेचारा अकेला इन चार सौ गायों को कैसे संभालेगा? जंगली जानवरों से वह अकेला इनकी रक्षा कैसे करेगा? गुरू ने इन बेचारे को इतनी कठोर सेवा का काम क्यों दिया? उसको चार-पांच मददगार भी क्यों नहीं दिए? घने जंगल में अकेले रहना कोई खेल नहीं है।

लेकिन सत्यकाम को किसी बात की फिक्र नहीं थी।

गुरू गौतम सत्यकाम के उत्साह और पक्के इरादे से बड़े खुश हुए। उसके सिर पर हाथ रखकर बोले, "बेटा, तेरा यह साहस और पक्का इरादा तेरे रास्ते के संकटों को दूर करेगा। मेरा विश्वास है कि तू गाय की सेवा के पवित्र काम में सफल होगा।"

दूसरे दिन बड़े सबेरे सत्यकाम ने गुरू और गुरूपत्नी को प्रणाम किया और अपने साथियों को नमस्कार कर, सबसे विदा ली। जब वह चार सौ गायों के साथ आश्रम से निकला तो सबकी आंखों में आंसू छलक आये। गुरुपत्नी ने उसे एक गठरी में रास्ते का भोजन दिया, और अनेक आशीर्वाद दिए। सत्यकाम के हाथ में लाठी, कंधे पर मृग-चर्म और पीठ पर गुरूपत्नी की दी छोटी-सी गठरी थी।

आगे-आगे गायें थीं और उनके पीछे था जाबाल!

दिनभर में सत्यकाम ने कोसों की दूरी तय की। शाम का समय हो गया। उसने गायों के झुंड को रोककर, पेड़ के नीचे डेरा डाल दिया। रातभर वहीं आराम किया और दूसरे दिन फिर गायों को लेकर आगे चल पड़ा। जैसे-जैसे वह उत्तर की ओर बढ़ा, उसने देखा कि वहां बहुत हरी घास है। छायादार ऊंचे-ऊंचे पेड़, कल-कल करते झरने वातावरण को बहुत सुंदर बना रहे थे। पांच-सात दिनों में तो वह काफी दूर आ गया। उसे एक

ऐसा उपवन मिला, जिसने उसका मन मोह लिया। उसने इसी जगह पर रहने का फैसला किया। चारों ओर हरी-हरी घास उगी थी। एक छोटी-सी नदी भी बह रही थी। जमीन समतल थी। पेड़-पौधे फल-फूलों से लदे हुए थे। प्रकृति की इसी गोद में उसने अपना डेरा डाल दिया। गायों के लिए एक सुंदर बाड़ा बनाया जिसके चारों ओर लकड़ी का घेरा था, और अपने लिए एक छोटी-सी झोंपड़ी बनायी।

गायों के साथ वह इतना हिल-मिल गया था कि गायें उसके इशारे पर चलती थीं। कभी वह उनकी पीठ पर थपकियां देता और कभी उन्हें दुलारता। छोटे-छोटे बछड़ों के साथ खेलने में बड़ा आनंद मिलता था। दिन-रात गायों की सेवा करना ही तो उसका धर्म था। हरी, अच्छी घास खाकर कमजोर गायें तंदुरुस्त होने लगीं। बूढ़ी और जवान गायों में फर्क करना कठिन हो गया। सत्यकाम ने सभी गायों के नाम रख दिए थे। जब वह जिसका नाम पुकारता, वह गाय दौड़कर उसके पास आती। उसका सारा समय इस प्रकार काम करते-करते ही बीत जाता।

देखते-देखते कई वर्ष बीत गये। जो बाछियां छोटी थीं, वे अब जवान होकर एक-दो बच्चों की मां भी बन गयीं। जो छोटे बछड़े थे वे अब बड़े, मजबूत बैल हो गये थे। उन्हें देख-देखकर सत्यकाम का मन फूला न समाता। गायों की गिनती बढ़ती गयी। चार-पांच वर्षों में तो चार सौ गायें बढ़कर, एक हजार से भी अधिक हो गयीं। लेकिन सत्यकाम को पता ही न था। वह तो इस काम में इतना रम गया था कि उसे दूसरी किसी बात का ख्याल ही न था।

एक दिन सुबह-सुबह सत्यकाम सूर्य-नमस्कार कर रहा था कि उसे पीछे से, बैलों के झुंड में से आदमी की आवाज सुनायी दी। उसने पीछे मुड़कर देखा तो एक बैल उससे कुछ कह रहा था।

वह उसके पास गया और बोला, "भगवन्, क्या आदेश है ?"

बैल ने उससे कहा, "सुनो सत्यकाम, अब गायों की संख्या एक हजार से भी ज्यादा हो गयी है। अब तुम हमें गुरू के

आश्रम में वापस ले चलो। अपनी कठोर गो-सेवा से तुम अब ब्रह्मज्ञान के अधिकारी बन चुके हो। मेरी ओर ध्यान से देखो। मैं तुम्हें ब्रह्मज्ञान के एक अंश का उपदेश देता हूं। इस अंश को 'प्रकाशवान' कहते हैं।"

सत्यवान ने हाथ जोड़कर उस बैल का उपदेश सुना।

उस बैल ने सत्यकाम को ब्रह्मज्ञान के पहले अंश का उपदेश दिया और यह भी कहा कि ब्रह्मज्ञान का आगे का उपदेश तुम्हें अग्निदेव देंगे। इतना कहकर वह बैल चुप हो गया, और बैलों के झुंड में मिलकर जुगाली करने लगा।

ब्रह्मज्ञान के एक पाद का ज्ञान प्राप्त करने पर सत्यकाम की ललाट पर अनोखा तेज छा गया।

दूसरे दिन सत्यकाम ने अपनी सभी गायों को जमा किया और गुरू के आश्रम की तरफ चल पड़ा। जिस जगह पर उसने गायों के साथ पांच साल बड़े ही आनंद से बिताए थे, उसे छोड़ते हुए उसके मन में बड़ा दुख हो रहा था। लेकिन वापस तो जाना ही था। उसे खुशी भी थी कि उसने गुरू की आज्ञा का पूरी तरह पालन किया है।

सत्यकाम गायों को हांकता हुआ दिन-भर चलता रहा। शाम घिर आयी तो उसने एक सुंदर जगह पर अपना डेरा डाल दिया। गायों को पेड़ों के नीचे बिठाया, और खुद नहाकर, हवन करने बैठा। जैसे ही उसने आहुति डाली, उसमें से अग्निदेव खुद प्रकट हुए और उसे संबोधित कर बोले, "बेटा सत्यकाम !"

सत्यकाम ने हाथ जोड़कर, विनम्र भाव से कहा, "भगवन् !"

अग्निदेव ने कहा, "सत्यकाम, तुम ब्रह्मज्ञान के अधिकारी बन चुके हो। तुम्हें ब्रह्मज्ञान के एक पाद का ज्ञान मिल चुका है। अब मैं तुम्हें ब्रह्मज्ञान के दूसरे पाद का उपदेश देता हूं। इस अंश को 'अनन्तवान्' कहते हैं।"

सत्यकाम ने हाथ जोड़कर बड़े प्यार से अग्निदेव का उपदेश सुना। उपदेश के बाद अग्निदेव ने कहा कि आगे का ब्रह्मज्ञान तुम्हें हंस देगा।

सत्यकाम ने अनुभव किया कि अग्निदेव के इस उपदेश से उसमें अनोखी शक्ति आ गयी है। वह रातभर इस उपदेश पर विचार करता रहा।

दूसरे दिन सबेरे फिर गायों के साथ उसने आगे का सफर शुरू किया। पूरे दिन के सफर के बाद, शाम घिर आयी। एक सुंदर सरोवर के तट पर वह ठहर गया। गायों को जमा किया और उनके लिए अच्छी जगह चुनी। हवन के लिए आग तैयार की, और हवन पूरा कर ध्यान में डूब गया।

पूरब दिशा से एक सुंदर हंस उड़ता हुआ वहां आया और सत्यकाम के पास बैठकर बोला, "सत्यकाम !"

सत्यकाम का ध्यान हंस की ओर गया। वह बोला, "भगवन् !"

हंस ने अपने पंख फड़फड़ाये और कहा, "सत्यकाम, मैं तुम्हारी साधना से बड़ा खुश हुआ हूं। मैं तुम्हें ब्रह्मज्ञान के तीसरे पाद का उपदेश देता हूं। इसे 'ज्योतिष्मान्' कहते हैं। इसके बाद का उपदेश तुम्हें एक जलमुर्गी देगी।"

उपदेश देकर वह हंस देखते-देखते गायब हो गया।

इस उपदेश को पाकर सचमुच सत्यकाम के भीतर एक प्रकाश फैल गया। चेहरा और शरीर उस तेज की आभा से चमकने लगे। रातभर वह इस नये उपदेश के विचार में डूबा रहा।

सबेरे सत्यकाम जल्दी उठा और

गायों को लेकर आगे बढ़ा। आज उसने काफी दूरी तय कर ली थी। जब सूरज डूब गया तब उसने एक सुंदर जगह पर डेरा डाला। वहां एक बड़ा बरगद का पेड़ था। उसके नीचे गायों को बांधकर वह खुद शाम की पूजा के लिए पास के तालाब पर गया।

एक जलमुर्गी पानी में तैरती हुई बड़े प्यार से बोली, "सत्यकाम!"

सत्यकाम जलमुर्गी के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला, "भगवती, क्या कहती हैं?"

जलमुर्गी ने सत्यकाम से कहा, "बेटा सत्यकाम, तुम्हारी साधना पूरी हो गयी है। तुम ब्रह्मज्ञान के अधिकारी बन गये हो। इसलिए बैल के रूप में खुद वासुदेव ने ब्रह्मज्ञान के पहले चरण का, अग्निदेव ने दूसरे चरण का, हंस के रूप में सूर्य ने तीसरे चरण का उपदेश तुम्हें दिया है। मैं तुम्हें उसके आखिरी चरण का उपदेश देती हूं। इसे 'आयतनवान्' कहते हैं। इसका ज्ञान हो जाने पर तुम ब्रह्मज्ञान के पंडित बन जाओगे।"

सत्यकाम बड़ी एकाग्रता से जलमुर्गी का उपदेश सुनता रहा। आदेश देकर

जलमुर्गी वहां से उड़ गयी। जलमुर्गी के रूप में खुद वरुणदेव ने उसे ब्रह्मज्ञान के चौथे चरण का उपदेश दिया था।

अगले पूरे दिन के सफर के बाद, शाम होने से कुछ पहले सत्यकाम सारी गायों के साथ गुरू के आश्रम में पहुंच गया।

सत्यकाम के वापस आने से गुरू और दूसरे लड़के बड़े खुश हुए। सत्यकाम ने आते ही गुरू के चरणों में सिर झुकाया, गुरूपत्नी के पैरों पड़ा और अपने सभी साथियों को नमस्कार किया।

आश्रम में सत्यकाम के आने से बड़ी चहल-पहल मच गयी। सभी उसे बड़े प्यार से मिले। पांच साल पहले जब वह यहां से चार सौ गायों को लेकर रवाना हुआ था, तब के सत्यकाम में और आज के सत्यकाम में बड़ा फर्क था। उसके अंग-अंग से ब्रह्मतेज की अद्भुत आभा फूट रही थी।

गुरू ने सत्यकाम से कहा, "बेटा सत्यकाम, तुम्हारे चेहरे की चमक और खुशी देखकर मुझे लगता है कि तुम्हें ब्रह्मज्ञान मिल चुका है। बेटा बताओ, तुम्हें किस गुरू ने इसका ज्ञान दिया है?"

सत्यकाम ने हाथ जोड़कर कहा, "गुरूदेव, मेरे लिए आप ही एकमात्र गुरू हैं। मेरा और कोई गुरू नहीं है। मुझे जो ब्रह्मज्ञान मिला है उसे चार दैवी शक्तियों ने दिया है।" उसने गुरू को सारी बातें विस्तार से बतायीं। उसने यह भी बताया कि उसे उस समय यह एहसास हो रहा था कि यह ज्ञान उनकी कृपा से ही उसे मिल रहा है।

गुरू बड़े खुश हुए। उन्होंने कहा, "बेटा सत्यकाम, तुम्हारी कठोर गो-सेवा, सत्यनिष्ठा और ज्ञान पाने की भूख के कारण ही यह ज्ञान तुम्हें मिला है। तुम जैसे लायक बेटों के कारण धरती अपने को धन्य समझती है। तुम्हारी श्रद्धा और भक्ति अनोखी है," यह कहते-कहते गुरू गौतम गद्गद् हो उठे और उन्होंने सत्यकाम को छाती से लगा लिया।

सत्यकाम बड़ी विनम्रता से बोला, "गुरूदेव, मुझे जो ज्ञान मिला है, यह आपकी कृपा और आशीर्वाद का फल है। मैं तो एक गंवार लड़का था। आपने मुझे शिष्य के रूप में अपनाया, आपकी दया थी। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप फिर से मुझे ज्ञान दीजिए। इसी से मुझे शांति मिलेगी।"

" गुरुदेव, मेरे लिए आप ही एकमात्र गुरु हैं ! "

सत्यकाम की प्रार्थना सुनकर गुरू गौतम ने कहा, "बेटा, ब्रह्मविद्या का जितना ज्ञान तुम्हें मिला है, वह काफी है। अब तुम पूरे ज्ञानी हो गये हो। तुम्हारी यह सिद्धि तुम्हारी गो-सेवा और सत्यनिष्ठा का फल है। तुम्हारा यश सब तरफ फैले, यही मेरा आशीर्वाद है।"

गुरू ने दूसरे शिष्यों को कहा, "सत्यकाम जब यहां पहली बार आया था, तुम सबने उसका बड़ा मजाक किया था। तुम सब जाति को सबसे बड़ी पूंजी मानते रहे। वेद, उपनिषद, व्याकरण आदि को रटने में ही सच्चा ज्ञान समझते रहे। इन झूठे जंजालों में तुम फंस गये, इसलिए आजतक, उसी जंजाल में फंसे हो। सच तो यह है कि जीवन की सच्ची पढ़ाई, जीवन जी कर, उसके अनुभव के आधार पर होती है। सत्यकाम ने जीवन जीने की कोशिश की और उसी कोशिश में से उसे सच्चा ज्ञान मिला है।"

गुरू ने सत्यकाम से कहा, "बेटा, मैं काफी बूढ़ा हो गया हूं। अब मैं तुम्हें इस गुरूकुल का आचार्य बनाता हूं।"

सत्यकाम विनय से झुक गया, "गुरूदेव, आपका आदेश सर आंखों पर। मैं जो कुछ हूं, आपके कारण ही तो हूं।"

उस दिन का अनजाना बालक आज गुरूकुल का आचार्य बनाया गया।

सत्यकाम ने बता दिया कि जन्म से कोई बड़ा-छोटा, ऊंचा-नीचा नहीं होता है। हम अपने जीवन में जो करते हैं, वही हमारा असली परिचय होता है।

सत्यकाम ने अपने ज्ञान और लगन से गुरू गौतम के गुरूकुल को और भी ऊंचा उठाया, और उस युग के सर्वश्रेष्ठ गुरूकुलों से भी आगे खड़ा कर दिया। ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पांचवीं किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

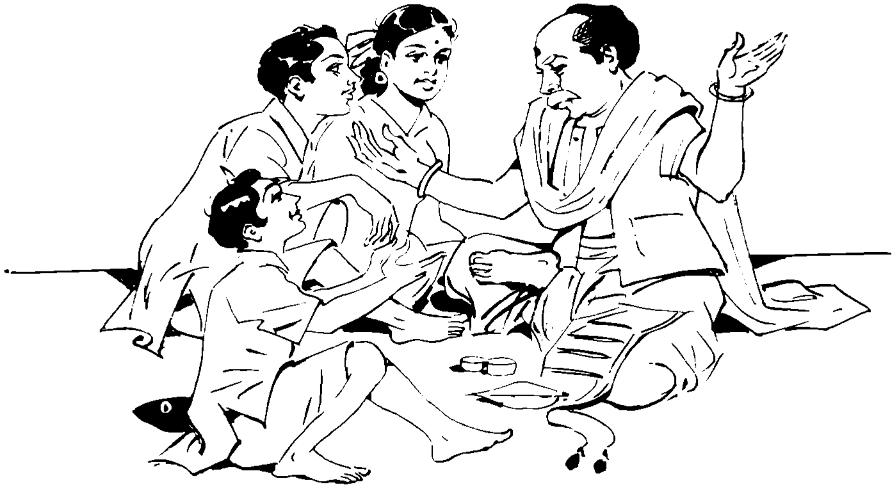

हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई-४००००२